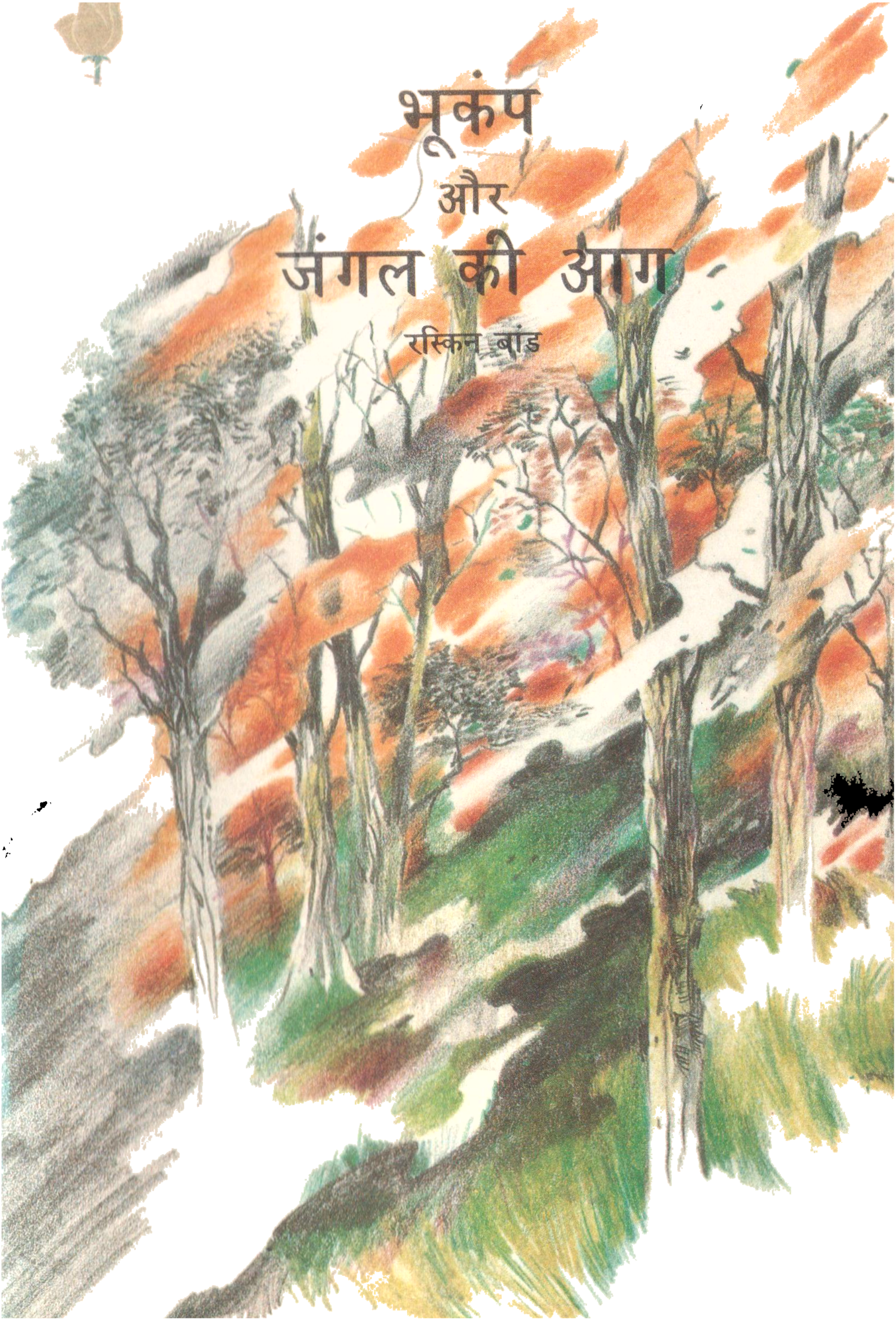
भूकंप और जंगल की आग

रस्किन बांड



ISBN 81-237-0879-3

पहला संस्करण : 1994 (शक 1916)

Quakes And Flames (*Hindi*)

रु 7.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित

नेहरू बाल पुस्तकालय

भूकंप और जंगल की आग

रस्किन बांड

अनुवाद

ऋषिकांत चतुर्वेदी

चित्रांकन

सुबीर राय



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

भूकंप



1

जब भी कोई संकट की घड़ी आती, दादाजी अपने स्नानघर में हुआ करते थे।

वे स्नान कर रहे थे, जब एक जंगली हाथी बगीचे की दीवार को गिरा कर दादी मां के कीमती गुलाबों और मीठी मटर को रौंदता हुआ, बगीचे को तहस-नहस करके भीतर आ धमका था। वे स्नान कर रहे थे, जब भूकंप में मकान की छत उड़ गयी थी। और वे उस समय भी स्नान कर रहे थे, जब मेहमान चाची की चीखें शुरू हो गयी थीं, क्योंकि उनकी शृंगार की मेज पर एक अजगर का बच्चा कुंडली मारकर बैठ गया था। इन सभी अवसरों पर उन्होंने हैरानी प्रकट की थी कि उन बीस मिनटों के दौरान, जबकि वे अपने स्नान-टब में रहते हैं, कुछ भी हो सकता है। जब तक उन्होंने कपड़े पहने, सब कुछ समाप्त हो चुका था—जंगली हाथी चिंघाड़ते हुए अपनी राह वापस चला गया था, भूकंप का संकट गुजर चुका था, और नन्हें मास्टर राकेश द्वारा अजगर के बच्चे को हटा दिया गया था, जिसने पहले स्वयं ही उसे वहां रखा था।

दादाजी का स्नान, कई बाल्टियां गर्म पानी से भरे पुराने ढंग के एक लोहे के टब में होता था जिसमें वे पोदीने की टहनियां भी डाल दिया करते थे। पोदीना-स्नान ! किसी ने इसके बारे में नहीं सुना था, लेकिन दादाजी का कहना था कि यह बेहद स्फूर्तिदायक है।

दादाजी स्नान के समय गाना गाते थे और खूब पानी छपछपाते थे। शायद इसीलिए उन्हें इसकी कोई खबर ही नहीं रहती थी कि बाहर क्या कुछ घट रहा है।

वे स्नानघर में थे जब उन लोगों ने उस भयावह भूकंप का पहला



झटका महसूस किया जो कि नगर के अधिकांश भाग को मलबे के ढेर में बदल डालने के लिए आया था।

परिवार (अथवा उसका अधिकांश भाग) शिलांग में रह रहा था, जो चेरापूंजी पहाड़ियों में बसा एक छोटा सा व्यस्त शहर है और जहां दादाजी श्री बर्मन ने वन सेवा में नौकरी के बाद अवकाश ग्रहण किया था। उन्होंने नगर के सीमावर्ती इलाके में एक पुराना बड़ा सा मकान खरीदा, यह मकान इतना बड़ा और इतना अधिक पुराना था कि उनकी पेंशन का बड़ा हिस्सा उसकी लगातार होने वाली मरम्मत पर खर्च हो जाया करता था। दादी मां श्रीमती बर्मन खींचतान कर गुजारा चलाने की व्यवस्था कर लेती थीं। दादाजी की वन सेवा के दिनों से चले आ रहे खानसामे, मुमताज के अलावा उनके यहां कोई नौकर नहीं था; उसके स्वयं के चार छोटे छोटे बच्चे थे।

श्री एवं श्रीमती बर्मन के पोते-पोतियां उनके साथ ही रहते थे। ग्यारह वर्ष का राकेश रोज सुबह अपनी साइकिल चलाकर स्कूल जाता था। छह वर्ष का मुकेश, जिसने सात वर्ष की उम्र हो जाने से पहले स्कूल जाने से इंकार कर दिया था। तीन वर्ष की डौली, जो घर तथा बगीचे में दादी मां के पीछे पीछे चलती थी और मुर्गियों को दाना खिलाने, कुत्ता (जो आधा डचशुंड व आधा स्पेनियल था और जिसे पिकिल कहकर पुकारा जाता था) और एक बकरी को, जिसके बारे में दादाजी का दावा था कि वह एक दिन अवश्य दूध देगी, हालांकि अभी तक ऐसा हुआ नहीं था, खाना खिलाने में दादी मां की मदद करती थी।

बच्चों की मां डौली के जन्म के समय चल बसी, और उनके पिता श्री बर्मन कुछ सौ मील की दूरी पर एक चाय-बागान में नौकरी करते थे। वहां कोई स्कूल नहीं था। इसलिए बच्चे श्री बर्मन के माता-पिता के साथ ही रहने लगे, जो किसी भी कीमत पर उन्हें अपने से अलग करने को तैयार नहीं थे।

भारत के इस हिस्से में लगभग हर वर्ष भूकंप के झटके महसूस किए जाते थे, लेकिन पिछले तीस वर्षों से वास्तव में कोई बड़ा भूकंप नहीं आया था।

"भूकंप आने पर आप क्या करेंगे?" राकेश ने पूछा, जिसने पिछले भूकंप के बारे में काफी कुछ सुना था।

"बहुत कुछ करने का तो समय ही नहीं मिलता," दादाजी ने कहा। "सभी एकाएक घरों से बाहर दौड़ने लगते हैं।"

"मैं तो इसके समाप्त होने तक अपने बिस्तर में ही रहूंगा," राकेश बोला।

"मैं अपने बिस्तर के नीचे छिप जाऊंगा," मुकेश ने कहा। "भूकंप वहां तक पहुंच ही नहीं पायेगा।"

"दरवाजे के नीचे खड़ा होना सबसे अच्छा है," दादी मां बोली। "अगर तुम भूकंप की तस्वीरें देखो तो पाओगे कि दरवाजों की चौखटें हमेशा बची रहती हैं।"

हालांकि शिलांग एक ऐसा क्षेत्र है, जहां कभी कभी भूकंप आते रहते हैं, फिर भी परिवार को वहां रहना अच्छा लगता था। वहां एक झील थी, एक चहल पहल वाला सुंदर बाजार था और दादी मां का बगीचा तितलियों, पक्षियों तथा पेड़-पौधों के साथ साथ फलों के पेड़ों तथा ऐसे पेड़ों से भी भरा पूरा था, जिन पर चढ़ने का मजा ही कुछ और है। राकेश को अपनी साइकिल पर सवार होकर शहर का चक्कर लगाने में बहुत अच्छा लगता था। मुकेश बाजार में मिठाई की दुकानों का आनंद लेता था या फिर मुमताज के दो बेटों के साथ धूल में कुश्ती किया करता था। डौली जीने के नीचे अपनी गुड़िया का घर बनाने में मग्न रहती थी।

शिलांग में जीवन सामान्य गति से चल रहा था। बगीचे में हाथी घुस आने के अलावा हाल ही में कोई विशेष उत्तेजक घटना परिवार में नहीं घटी थी। वर्ष की प्रमुख घटना, स्कूली खेलों में राकेश द्वारा लंबी कूद में जीता गया एक छोटा सा कप थी, जो इतना छोटा था कि उसने इसे डौली को उसकी गुड़िया के घर के लिए भेंट में दे दिया था।

और एक दिन सुबह जब दादाजी स्नान कर रहे थे, अचानक शहर बेहद स्तब्ध और शांत हो गया - - -

2

दादाजी को कुछ भी महसूस नहीं हुआ क्योंकि वे पानी छपछपा रहे थे और गाना गा रहे थे। लेकिन दादी मां, जो बगीचे में गुलाब की झाड़ियों को कतर कर साफ कर रही थीं, अपना काम रोककर ध्यान से चारों तरफ देखने लगीं। पक्षी एकाएक खामोश क्यों हो गए? न केवल पेड़ों पर बैठे पक्षी बल्कि दड़बे में बैठी मुर्गियां भी ! बकरी ने पत्तियां चबानी बंद कर दीं। और कुत्ता, जो कि मुंडेर पर बैठी गिलहरी पर लगातार भौंक रहा था, कान लटकाकर चुपचाप अपने पंजों के बीच सिर रखकर बैठ गया।

"कैसी कमाल की बात है !" दादीमां चिल्लाई, "मुझे लगता है कि - - -" और तभी हुआ इससे बिल्कुल उल्टा ! मुर्गियों ने अपनी कुड़ कुड़ शुरू कर दी, कुत्ता भौंकने लगा, और पक्षियों ने चीत्कार करना और पंख फड़फड़ाना शुरू कर दिया। पड़ोस में कौवे उड़ने लगे और जोर से कांव कांव करते हुए सिर के ऊपर मंडराने लगे। मुर्गी के चूजे गोल घेरे में घूम घूम कर ऐसे पंख फड़फड़ाने लगे मानो कोई उनका पीछा कर रहा हो। दीवार पर बैठी दो बिल्लियां झट से नीचे कूदीं और अलग अलग दिशाओं में गायब हो गयीं।

दादी मां ने कहीं पढ़ा था कि भूकंप आने का अहसास जानवरों को इंसानों से कहीं जल्दी हो जाता है। और वाकई, जानवरों द्वारा की गयी आवाजें सुनने के आधे मिनट के भीतर ही उन्होंने खनखनाहट और गड़गड़ाहट की आवाज सुनी, जैसे कोई तेज गति की रेलगाड़ी चली आ रही हो।

करीब एक मिनट तक आवाज तेज होती गयी और फिर जमीन में पहला कंपन हुआ। मालूम होता था जैसे इस समय तक तमाम

जानवर पागल से हो उठे थे और डरावनी आवाजों में शोरगुल कर रहे थे। पेड़ आगे पीछे झूल रहे थे, दरवाजे धड़ाधड़ बज रहे थे और खिड़कियां जोर जोर से हिल रही थीं। बाद में दादी मां ने बताया कि उनकी आंखों के सामने वास्तव में घर डगमगाने लगा था। उन्हें सीधा खड़ा रहने में कठिनाई हुई, हालांकि बाद में उन्होंने स्वीकार किया कि ऐसा शायद जमीन में कंपन होने से अधिक उनके घुटनों में हुए कंपन की वजह से हुआ होगा।

पहला झटका रहा तो केवल आधे मिनट तक ही किंतु यह कहीं अधिक लंबा प्रतीत हुआ। दादी मां को आभास हुआ कि दादाजी स्नान कर रहे होंगे, राकेश अपने स्कूल के रास्ते में कहीं होगा, मुकेश मुमताज के बेटे के साथ कंचे खेल रहा होगा, डौली सीढ़ियों के नीचे अपनी गुड़िया के घर में व्यस्त होगी और मुमताज रसोईघर में सब्जियां धो रहा होगा। दादी मां डौली को लाने के लिए दरवाजे के भीतर दौड़ीं।

जैसे ही दादी मां ने ऐसा किया, गड़गड़ाहट की आवाज और तेज हो गयी। दादाजी ने इसे नहीं सुना क्योंकि वे अभी तक गाना गा रहे थे। लेकिन दादी मां ने यह सब सुना और डौली ने भी, जिसे यह भी लगा कि उसकी गुड़िया का घर भी डगमगाना शुरू हो गया है। मुमताज ने गड़गड़ाहट के साथ साथ चीनी के बर्तनों के खनखनाने की आवाज भी सुनी। एक चाय की केतली किनारे की अलमारी से छिटककर फर्श पर आ गिरी और चकनाचूर हो गयी। बैठक में एक पुराना कलश (दादाजी के अनुसार तीन सौ वर्ष पुराना) अंगीठी-कानस से छिटककर जमीन पर गिरा और टुकड़े टुकड़े हो गया।

डौली ने जब पहला झटका महसूस किया तो वह अपनी प्यारी गुड़िया को घसीटकर अनायास सरकते हुए जीने के नीचे वाली जगह के अंदर पहुंच गयी। गुड़िया के तमाम बाल बहुत पहले उखड़ चुके थे, एक आंख भी निकल चुकी थी, लेकिन यह गुड़िया काफी समय से डौली के पास थी, इसलिए उसने महसूस किया कि उसकी विशेष देखरेख की जरूरत है। उसकी समझ में नहीं आया कि घर क्यों हिल रहा है। लेकिन वह डरी नहीं। उसने यह मान लिया कि घर

कभी कभी शायद ऐसे ही हिलते रहते हैं।

दादी मां को वह जीने में दिखाई नहीं दी और वे "डौली, डौली! तुम कहां हो ?" पुकारती ड्राईंग-रूम की तरफ दौड़ीं। दीवार पर लटकी घड़ी पागल-सी होकर लगातार घंटे बजाने लगी।

रसोईघर में मुमताज अलमारी में से ताबड़तोड़ गिरती प्लेटों, गिलासों व तश्तरियों को लपकने की कोशिश में जुटा था। मुकेश अपने सारे कंचों से हाथ धो बैठा था, और वो भी अपने दोस्तों के साथ किसी खेल में नहीं। वे छिटक कर लुढ़कते हुए दरवाजे के बाहर जाकर नीचे सड़क पर बिखर गए और फिर जमीन में अदृश्य हो गए, जहां बहुत सारी दरारें उभर आयी थीं।

दादाजी ने जब चीजों को अपने वश के बाहर जाता महसूस किया तो उन्होंने गाना बंद कर दिया। उन्होंने ध्यान दिया कि उनका नहाने का टब खाली हो चुका था। निश्चित तौर पर उन्होंने इतना अधिक पानी नहीं छपछपाया था ! उन्होंने मग की तरफ हाथ बढ़ाया किंतु वह उन्हें नहीं मिला। उन्होंने टब से बाहर निकलने की कोशिश की, तो टब स्वयं ही ऊपर की तरफ उठा और उन्हें स्नानघर के पानी से लबालब फर्श पर पटक दिया।

"कोई भूत!" दादाजी चीखे। "यहां जरूर कोई शरारती भूत है, जो टब के साथ ऐसा खेल खेल रहा है।"

उन्होंने झपटकर तौलिया उठाया और उसे अपनी कमर पर लपेट लिया। फिर झटके से स्नानघर का दरवाजा खोलकर बाहर की ओर भागे।

तब तक भूकंप का पहला झटका खत्म हो चुका था। राकेश अपने स्कूल के बीच रास्ते में ही था, जब उसे अपनी साइकिल अपने नियंत्रण से बाहर होकर, सड़क पर इधर उधर जाती महसूस हुई। वह एक बैलगाड़ी से लगभग टकरा ही गया था।

वह यह देखने के लिए साइकिल से नीचे उतरा कि कहीं उसकी चेन तो नहीं अटक गयी। लेकिन उसने पाया कि साइकिल की ही तरह सड़क भी उतनी ही अस्थिर है। मगर यह अहसास केवल कुछ क्षणों तक ही रहा। सब कुछ फिर से स्थिर हो गया। हालांकि आश्चर्य

की बात यह थी कि बैल अब भी आगे बढ़ने से इंकार कर रहे थे।

"क्या तुमने महसूस किया?" गाड़ीवान ने पूछा।

"सब कुछ हिल रहा था," राकेश ने कहा। "क्या यह भूकंप था?"

"हां, छोटा सा," गाड़ीवान बोला। "या किसी बड़े भूचाल की शुरुआत!"

राकेश साइकिल पर सवार होकर स्कूल पहुंचा। कक्षाएं शुरू होने के लिए अभी घंटी नहीं बजी थी। मैदान में उत्तेजनापूर्ण हलचल मची हुई थी, क्योंकि वहां लड़के और लड़कियां झुंड बनाकर खड़े हुए थे। वे उस झटके के बारे में बातें कर रहे थे जिसे अभी अभी महसूस किया गया था। हैडमास्टर ने फैसला किया कि अगर फिर से कोई भूकंप का झटका आता है तो उस स्थिति में बच्चे स्कूल की पुरानी इमारत की बजाय बाहर खुले में अधिक सुरक्षित रहेंगे। इसीलिए उन्होंने प्रार्थना सभा की घंटी बजाने को रोके रखा। स्वाभाविक रूप से इस देरी की वजह से बच्चे प्रसन्न थे। किंतु पंद्रह मिनट बाद तक भी पुनः कुछ नहीं घटा तो हैडमास्टर ने स्कूल में पढ़ाई शुरू कराने का फैसला किया। इस पर विरोध की आवाजें और उसके बाद छुट्टी किए जाने की मांग शुरू हुई। राकेश अपनी कक्षा का प्रवक्ता बना।

"मास्टर जी, पिछले वर्ष जब छत गिर गयी थी, तो आपने हमें छुट्टी दी थी।"

"लेकिन अभी तो छत नहीं गिरी," हैडमास्टर ने कहा।

"अगर दीवारें गिर गयीं तो क्या होगा?"

"जब दीवारें गिरेंगी, तब हम छुट्टी के बारे में विचार कर लेंगे," हैडमास्टर ने बात काट दी। "अब सब अपनी अपनी कक्षाओं में जाओ!"

"मैं ठीक से नहा भी नहीं पाया," दादाजी बड़बड़ाए। "टब में पानी ही कम था!"

"क्या आपने महसूस नहीं किया?" दादी मां ने पूछा।

"महसूस किया! क्या?"

"भूकंप।"

"मैने तो कुछ भी महसूस नहीं किया। तुमने इसकी कल्पना कर ली होगी।"

"वाह! ज्यादातर चीनी के बर्तन, साथ ही साथ वह कलश भी टूट चुका है, जिसे आप बर्मा से लेकर आए थे। केले के पत्ते के अलावा आप और किसी चीज में अपना दोपहर का भोजन नहीं कर सकेंगे। या फिर डौली के खिलौने वाले चाय के बर्तन इस्तेमाल कर लेना।"

"मुकेश और डौली कहां हैं?"

"डौली जीने के नीचे है। वही उसकी मनपसंद जगह है। मुकेश बाहर मुमताज के सबसे बड़े लड़के के साथ खेल रहा है। उस कंपन से उन्हें कोई परेशानी हुई हो, ऐसा नहीं लग रहा है। मेरी प्रार्थना है कि इस झटके से राकेश के स्कूल में कोई नुकसान न हुआ हो।"

"ऐसा कैसे हो सकता है . . . हमें इसका पता ही नहीं चला।"

"आप नहाते समय कुछ भी महसूस नहीं करते। बाकी सभी ने तो इसे महसूस किया है–मुर्गियों तक ने ! उन्हें मानसिक आघात पहुंचा है और अब वे कई दिनों तक अंडे नहीं देंगी।"

मकान का चक्कर लगाते हुए, दादी मां ने दीवारों में कई दरारें देखीं और दादाजी का ध्यान उनकी तरफ दिलाया।

"ये तो यहां पहले से ही थीं," दादाजी ने कहा। "सालों से ऐसे ही हैं !"

"खैर ! मैंने इन्हें पहले कभी नहीं देखा। हमें अब यह मकान छोड़ देना चाहिए। यह बहुत बड़ा है और इसकी देखभाल पर भी बहुत खर्च करना पड़ता है।"

"मेरा ख्याल है, हम कलकत्ता जा सकते हैं। लेकिन तुम्हें एक छोटे फ्लैट में रहने में आनंद नहीं आयेगा। और फिर तुम भीड़भाड़ की आदी भी नहीं हो।"

"मैं किसी दूसरे पहाड़ी इलाके के बारे में सोच रही थी जहां भूकंप न आते हों। हम इस जगह को बेचकर दार्जिलिंग या कालिमपौंग में कोई घर खरीद सकते हैं या उसे किराए पर ले सकते हैं।"

"तो फ़िर प्रार्थना करो कि दोबारा भूकंप न आये," दादाजी ने

कहा। "कोई भी इस मलबे के ढेर को नहीं खरीदेगा।"

तभी उन्होंने बगीचे में मुकेश के चिल्लाने की आवाज सुनी।

"वह हमेशा की तरह फिर कोई शरारत कर रहा है," दादाजी बड़बड़ाए और शोरगुल के बारे में जानने के लिए बाहर चले गये।

मुकेश को बगीचे में एक घोंसला और कई टूटे हुए अंडे पड़े मिले थे, और वह चीख इसलिए रहा था क्योंकि गुस्से से बौखलाए हुए एक बाम्कार पक्षी के जोड़े ने उस पर हमला कर दिया था।

"तुमने उस घोंसले के साथ क्या किया?" दादाजी ने जानना चाहा।

"कुछ नहीं !" मुकेश बोला, "जब सारी चीजें हिल रही थीं तो यह भी पेड़ से नीचे गिर पड़ा।"

"ठीक है, ऐसा ही हुआ होगा। लेकिन घोंसले से दूर रहो, वरना ये पक्षी सचमुच तुम्हारे पीछे पड़ जाएंगे।"

कुत्ता पिकिल इधर उधर दौड़ रहा था और इस खलबली के लिए दोषी व्यक्ति की तलाश कर रहा था। वह और पड़ोसियों का कुत्ता दरवाजे की सीढ़ियों पर से एक-दूसरे पर भौंकने लगे। "मेरे घर को हिलाने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई !" शायद वे यही कह रहे थे। आखिर इस बहस से थककर, पिकिल भंडारघर में चला गया और चूहों की तलाश में लग गया। वह चूहे पकड़ने में माहिर था।

शहर में हर कोई अभी अभी महसूस किए गए कंपन के बारे में बातें कर रहा था। चूंकि कोई गंभीर नुकसान नहीं हुआ था और कोई भी विशालकाय चीज टूट कर ढेर नहीं हुई थी, इसलिए इसे सबने एक बड़ा मजेदार खेल माना। लेकिन ऐसे बूढ़े लोग भी थे, जिन्हें तीस वर्ष पहले आये भूकंप की याद हो आई थी जिसमें उन्होंने अपने दोस्तों, रिश्तेदारों तथा घरों को खो दिया था। तब सैकड़ों मकान गिरकर ढेर हो गए थे। उन्हें मालूम था कि भूकंप के मामूली कंपन के बाद प्रायः एक दूसरा, कहीं अधिक बड़ा झटका आया करता है, इसलिए वे इस आशंका से डरे हुए थे। जेल के टूट कर गिरने और कैदियों के भाग निकलने; शक्तिशाली ब्रह्मपुत्र नदी द्वारा अपनी राह बदलकर पूरे असम को बाढ़ में डुबो देने, जब मगरमच्छों ने नगरों

व गांवों पर धावा बोल दिया था; हिमालय से हिमखंडों के खिसक कर नीचे आ जाने; और पृथ्वी फट जाने व समूचे शिलांग के उसमें समा जाने की चर्चाएं होने लगीं।

"संसार का अंत निकट है !" बाजार में एक साधु ने भविष्यवाणी की।

"हे साधु बाबा, हमें बताइये कि इससे बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?" एक दुकानदार ने पूछा।

"स्वयं को शुद्ध करो," साधु बोला। "अपनी आत्मा का ध्यान रखो!"

"दूसरे शब्दों में," वहां से गुजरता एक हाजिर जवाब व्यक्ति बोला, "अपने ग्राहकों को मत ठगो।"

"और तुमने कभी अपने गुजारे के लिए कोई काम किया है," दुकानदार चिल्लाया। "तुम पर तो अब भी मेरे बीस रुपये उधार हैं।"



इधर श्री बर्मन के घर में, परिवार चुपचाप दोपहर का भोजन कर रहा था। चुप्पी अधिक समय तक नहीं रही, क्योंकि डौली यह जानना चाहती थी कि मुकेश की प्लेट में क्या है (हालांकि वह उसकी अपनी प्लेट से भिन्न नहीं थी), और जब उससे कहा गया कि वह चुपचाप अपना भोजन करे तो वह झल्ला पड़ी।

"ये बच्चे," राकेश ने चावल और फली की सब्जी निगलते हुए ठंडी आह भरी। "इस समय तक इन्हें स्कूल चले जाना चाहिए था।"

"इस समय तुम्हें स्कूल वापस जाना चाहिए," दादी मां ने कहा। "डेढ़ बज चुका है।"

"आज दोपहर बाद हमारा स्कूल नहीं लगेगा। हालांकि हमें भूकंप की छुट्टी नहीं मिल पायी, किंतु हम लोग क्रिकेट का एक मैच देखने जा रहे है। कलकत्ता से एक टीम आयी हुई है जो कि लेक क्लब के साथ खेलेगी।"

"मुझे भी अपने साथ ले चलो," मुकेश ने कहा।

"नहीं, तुम हमेशा साइकिल के कैरियर से फिसलकर नीचे गिर जाते हो।"

"तो मैं आगे बैठ जाऊंगा।"

"तुम घर पर ही रहोगे," दादी मां बोली। "पिछली बार जब तुम फ़ुटबाल मैच देखने गए थे तो गुम हो गये थे।"

"पर यह तो क्रिकेट मैच है," मुकेश ने दलील दी। "क्रिकेट मैच में कोई गुम नहीं होता।"

"क्या तुम मेरे साथ बंगाली मिठाई की दुकान पर चलना पसंद करोगे?" दादाजी ने पूछा।

"अहा ! मजा आ गया," मुकेश बोला। "यह क्रिकेट से कहीं बेहतर है। उस सड़ी हुई साइकिल से भी बेहतर है।"

"ये भूकंप क्यों आते हैं?" राकेश ने पूछा।

"अच्छा सुनो," दादाजी बोले। "पृथ्वी बहुत पुरानी है, करोड़ों वर्ष पुरानी और कभी कभी इतनी पुरानी होने के कारण इसे तनाव और थकान महसूस होती है. . ."

"क्या आप भी करोड़ों साल के हैं?" मुकेश ने टोका।

"अभी नहीं," दादाजी ने कहा "अभी नहीं। लेकिन, मेरी ही तरह पृथ्वी भी थोड़ी अंगड़ाई और जम्हाई लेना चाहती है और जब यह होता है तो पृथ्वी की सतह पर ऐंठन होती है जिसे हम भूकंप कहते हैं।"

"लेकिन यह यहीं पर अंगड़ाई क्यों लेती है?" राकेश ने पूछा।

"यह कहीं पर भी अंगड़ाई ले सकती है, और लेती भी है। टोकियो, सेन फ्रांसिस्को, ईरान, दक्षिणी प्रशांत, इटली, तुर्की पृथ्वी का शायद ही कोई ऐसा कोना हो, जहां कभी न कभी भूकंप न आया हो। कुछ जगहों पर अवश्य ही यह ज्यादा तीव्र होता है . . .। यह भी एक ऐसी जगह है जहां पृथ्वी अंगड़ाई लेना पसंद करती है।"

दोपहर के भोजन के बाद, राकेश साइकिल पर क्रिकेट के मैदान की ओर चला गया, दादाजी और मुकेश बाजार की दिशा में चल दिए। डौली दादी मां के पीछे पीछे आंगन में कपड़े धोने में उनकी मदद करने पहुंच गयी।

लगभग दस मिनट बाद ही, असली भूकंप महसूस किया गया, और आधा शहर गिरकर ढेर हो गया।

राकेश क्रिकेट के मैदान में पहुंच गया था, जब अचानक सड़क ऊपर नीचे हिचकोले खाने लगी। अगले ही क्षण, उसने स्वयं को जमीन पर गिरा पड़ा पाया।

पृथ्वी के भीतरी भाग से एक गहरी गूंज भरी आवाज निकलती महसूस हुई, और सड़क में ऐंठन होती रही। यह उस विशाल सांप की तरह दिख रही थी जो अपनी मृत्यु वेदना में पछाड़ें खा रहा हो। राकेश को लगा कि जमीन पर लेटे रहना, साइकिल पर सवारी करने से भी अधिक कठिन है।

क्रिकेट मैच, जो कुछ देर पहले ही शुरू हुआ था, अचानक समाप्त हो गया, क्योंकि पिच के आर पार एक विशाल दरार उभर आयी थी। इसके भीतर, एक तेज गेंदबाज, एक एम्पायर और सिली मिड-आन पर खड़ा एक क्षेत्ररक्षक गिर पड़ा था। बाद में उन्हें बचा लिया गया, लेकिन यह पहला मौका था जब किसी जगह पर भूकंप के कारण कोई मैच रद्द किया गया हो।

वे जो खेल रहे थे, अथवा झील की तरफ वाले पैवेलियन से मैच देख रहे थे, उन्होंने गूंजभरा गर्जन सुना। यह आवाज आधी पहाड़ी के झील में गिर जाने की वजह से हुई थी। पेड़ों, झाड़ियों व चट्टानों सहित जमीन, उभर कर फूलते हुए ऊपर उठी, फिर वापस नीचे गिर पड़ी। आकाश की तरफ धूल और पानी उठा, और उसी समय झील का तल फूट पड़ा, किसी ज्वार-लहर की तरह ऊपर और आसपास के मैदानी क्षेत्र में अपने जल को उगलने लगा। क्रिकेट खिलाड़ियों तथा दर्शकों का यह सौभाग्य था कि पानी का यह जबर्दस्त बहाव विपरीत दिशा की ओर था। लेकिन यह अपने साथ वहां खड़ी बहुत



सी कारों, चर रहे मवेशियों व बकरियों, टेलीफोन के खंभों, तथा पुरानी जेल की दीवारों को बहाकर ले गया।

जेल के सैकड़ों कैदियों के लिए भाग निकलने का यह अच्छा मौका था। लेकिन वे अचानक तेजी से हुई इस दुर्घटना के कारण इतना अधिक घबराए हुए थे कि जेल के पिछवाड़े ऊंचे मैदान की ओर भागने



के अलावा वे कुछ भी कर पाने की स्थिति में नहीं थे। उनमें से कुछ लोग ऐसा नहीं कर पाये और उफनती झील के तेज बहाव में बह गये। जो लोग सुरक्षित स्थान पर पहुंच गए थे, हड़बड़ी में झुंड बनाकर खड़े राहत की प्रतीक्षा कर रहे थे।

जमीन पर पड़े हुए राकेश ने देखा कि एक लहर उसकी ओर बढ़ती चली आ रही है। लहर उससे करीब पचास मीटर की दूरी पर थी, जब वह घिसटते हुए अपने पैरों पर खड़ा हुआ और पास के एक पेड़ की तरफ भागा।

सौभाग्य से वह एक विशाल बरगद का पेड़ था, जो अपनी हवा में झूलती कई जड़-शाखाओं, जो कि नीचे जमीन में पहुंचकर फिर से जड़ें जमा चुकी थीं, के साथ भली भांति सुरक्षित खड़ा था। इस पेड़ पर चढ़ना भी आसान था। राकेश जितना ऊपर चढ़ सकता था, चढ़ गया और नीचे चक्कर खाकर तेजी से बहते पानी को देखने लगा। उसने देखा कि उसकी साइकिल बहकर दूर जा चुकी है। और अब वह उसे कभी भी नहीं देख सकेगा।

दादाजी और मुकेश बाजार में मिठाई खा रहे थे। उन दोनों को गुलाब-जामुन, गुलाब की सुगंध वाले दूध तथा गहरे भूरे रंग के सिके हुए चीनी के मालपुए बेहद प्रिय थे। बूढ़ा आदमी और छोटा सा लड़का मिठाई की दुकान के बाहर खड़े, चाशनीदार गुलाब-जामुन गटक रहे थे।

बाजार स्वयं में ही चहल पहल भरी गतिविधियों का केंद्र था। यह दिन का सबसे ज्यादा व्यस्त समय था। सड़क पर सब्जी खरीदती औरतों तथा फुटपाथ पर चमकीले पीतल के सामान से लेकर पुराने कपड़ों व कामिक्स की पुस्तकों तक, हर चीज सड़क के किनारे की बड़ी दुकानों से प्रतियोगिता करके बेचने वाले फेरीवालों की बहुत भीड़ थी। साइकिल वाले, स्कूटर वाले, घोड़ा गाड़ियां, आवारा गायें, आवारा कुत्ते, यहां तक कि भटकते पुलिस के सिपाही भी, भीड़ के बीच से आ जा रहे थे।

मुकेश ने चार और दादाजी ने छह गुलाब-जामुन खाये थे कि मिठाई की दुकान उनकी आंखों के सामने डगमगाने लगी। उसके बाद

कपड़े का तिरपाल गिर पड़ा और दुकानदार अपनी मिठाइयों के बीच दब गया। सहायता मांगती उसकी आवाज गली से आते शोरगुल में दब कर रह गयी, जहां लोग भय से चीखते चिल्लाते भाग रहे थे।

दादाजी और मुकेश ने खुद को जूझते हुए दुकानदार के ऊपर पड़ा पाया। ज्यों ही दुकानदार ने खुद को अलग किया, मुकेश तिरपाल में फंस गया और मदद करके ही उसे बाहर निकाला जा सका। इस पूरे समय के दौरान जमीन हिल रही थी और दुकानें लड़खड़ाकर, ताश के पत्तों की तरह बिखर कर गिर रही थीं।

कुछ ही क्षणों में, एक सीधी सड़क पर बना बाजार मोड़ खाता टेढ़ा-मेढ़ा हो गया। सड़क इस हद तक विकृत हो गयी कि कुछ दुकानें जो अब तक इसके बायीं तरफ थीं, अब दायीं तरफ हो गयीं और दायीं तरफ वाली बायीं तरफ हो गयीं। पहिया गाड़ी में बैठा एक भिखारी, जो कभी भी अपने पैरों से नहीं चला था, उछलकर खड़ा हो गया और अपनी जान बचाने के लिए भागने लगा। गायें गायब हो गयीं और इसी तरह सिपाही भी। एक मोटर साइकिल जमीन में हो गए एक गड्ढे में गिरकर अदृश्य हो गयी, जबकि एक कार टाउन हाल की सीढ़ियों पर चढ़ गयी। तांगे का एक घोड़ा सड़क के बीचों बीच सरपट दौड़ता निकल गया। तांगे और उसके चालक का कहीं पता नहीं था।

टाउन हाल का भवन भी गिर चुका था और कई लिपिक व अधिकारी उसके नीचे दब गए थे। इस शक्तिशाली कंपन के समाप्त होने तक, कई दूसरी विशाल इमारतें भी ढह गयीं।

दादाजी भयभीत नहीं हुए। उन्होंने मुकेश को मिठाई के ढेर से बाहर निकाला और स्तब्ध पड़े दुकानदार को सहारा देकर खड़ा किया। तब उन्होंने महसूस किया कि भूकंप ने शहर के हर हिस्से को प्रभावित किया होगा।

"हमें फौरन घर वापस चलना चाहिए," उन्होंने कहा। "वहां कुछ भी हो सकता है।"

मुकेश को हाथ से पकड़कर खींचते हुए, वे सड़क पर दौड़ने लगे। मुकेश को उनके साथ दौड़ने में दिक्कत महसूस हुई। उसने दादाजी

को दौड़ लगाते कभी नहीं देखा था।

जब भूकंप का झटका आया तो डौली दादी मां की कपड़े धोने में मदद कर रही थी। यदि वे लोग घर के भीतर होते तो जीवित बाहर नहीं निकल सकते थे।

पहले कंपन की ही भांति, कुत्ता फिर से गुर्राने लगा और सभी पक्षी पेड़ों से उड़कर सिर के ऊपर चक्कर खाते हुए मंडराने लगे, और भारी शोरगुल करने लगे। फिर अचानक पेड़ों से होकर हवा का तेज झोंका आया और जमीन हिचकोले खाते हुए कांपने लगी।



डौली ने ऊपर देखा तो उसे लंबी चिमनी मकान की छत से उखड़ कर गिरती दिखाई दी।

"देखो, दादी मां !" वह चिल्लाई। "मकान नीचे गिर रहा है ! मेरी गुड़िया के घर का क्या होगा?"

"गुड़िया के घर की चिंता मत करो," दादी मां ने कहा। "हमें इमारत से दूर हट जाना चाहिए।"

जैसे ही मकान की दीवारें बाहर की तरफ लुढ़क रही थीं और छत भीतर गिर रही थी, वे बगीचे की तरफ भाग खड़ी हुईं। एक जोरदार धमाका हुआ और उसके बाद धूल और पलस्तर का गुबार छा गया।



दादी मां ने सड़क के पार देखा तो उन्हें दूसरे मकाने भी ढहते दिखाई दिए, बिल्कुल इसी तरह मानो कोई अदृश्य राक्षस उन्हें तोड़ फोड़कर जमीन पर पटक रहा हो। एक अंग्रेजी परीकथा की ये पंक्तियां उनके दिमाग में कौंधने लगीं - 'मैं धक्का दूंगा और मैं फूंक मारूंगा और मैं तुम्हारे घर को तोड़कर नीचे गिरा दूंगा'।

हवा अजीब ढंग से सांय सांय करके बह रही थी किंतु यह हवा नहीं थी, जिसके कारण नुकसान हुआ था; यह तो जमीन में हुआ स्पंदन था जिसने ईंटों तथा प्लास्टर, कड़ियों और शहतीरों को हिलाकर ढीला कर दिया था। हवा दमघोंटू धूल से भरी हुई थी। वे बोल नहीं पा रही थीं।

दादीजी ने सोचा कि सभी मकान कितने तुच्छ लग रहे हैं, बिल्कुल गुड़िया के घरों की तरह। फिर भी, उनमें से बहुत सारे मकान सौ वर्षों से भी अधिक समय से खड़े हुए थे। कहां सौ वर्ष-- और कहां एक क्षण में सब कुछ खत्म!

कंपन रुक चुका था, लेकिन उनका घर अब तक मलबे का ढेर बन गया था। एक पलंग का फ्रेम टूटी हुई खिड़की के बाहर झांक रहा था। स्नानघर के नल ने एक पिचके हुए सोफासेट को पानी से तर बतर कर रखा था। इधर टूटी पड़ी मेज और कुर्सी, उधर फटा प्रड़ा गलीचा, एक जानी पहचानी टोपी, फटी हुई किताबें, एक मुड़ा हुआ छाता यही कुछ निशानियां प्रमाण के रूप में शेष बची थीं कि यह कभी एक घर था।

बकरी लापता थी। मुर्गियां पता नहीं कहां चली गयी थीं। केवल वे कपड़े, जिन्हें डौली तथा दादी मां सूखने के लिए लटका रही थीं, ही ऐसी चीज थे जो इस तबाही से अछूते बच गए थे। वे मजबूती से तार के साथ लटके हवा में फड़फड़ा रहे थे।

उन्हें दूर से हवा के साथ चीखों की आवाज सुनाई दी, सहायता मांगती चीखें। लोग एक दूसरे को पुकार रहे थे। कुछ लोग केवल चिल्ला रहे थे, क्योंकि उनके पास और कुछ करने के लिए था भी नहीं।

डौली और दादी मां बगीचे के बीचों बीच बुत बनी खड़ी रहीं।

उन्हें इतना गहरा सदमा पहुंचा था कि वे तब तक हिल डुल भी नहीं सकीं, जब तक कि उन्होंने दादाजी और मुकेश को सड़क पर भागते हुए अपनी ओर आते नहीं देख लिया। तब वे भी दौड़ पड़ीं।

पिकिल ने स्वयं को भंडारघर में फंसा हुआ पाया। वह दो बड़े बक्सों के बीच से, एक भयभीत चूहे को पकड़ने की कोशिश कर रहा था, जब छत बक्सों के ऊपर आ गिरी। चारों तरफ धूल और अंधेरा फैल गया। पिकिल को यह सब बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। वह उस दमघोंटू जगह से बाहर आंना चाहता था, और इसके लिए वह राहत के इंतजार में बैठे रहने वाला नहीं था। डचशुंड नस्ल की सहज प्रवृत्ति और चूहों को खोज निकालने का उसका अपना अनुभव, आज उसके काम आया। उसने मलबे को खोदना शुरू कर दिया ताकि बाहर निकलने के लिए सुरंग जैसा रास्ता तैयार कर सके।

3

मुमताज की झोपड़ी उन गिने चुने घरों में से थी जो सुरक्षित खड़े थे। हल्की, मामूली तथा लकड़ी के तख्तों और फूस की छत से बनी वह झोपड़ी तेज हवा से उड़ सकती थी। किंतु वह भूकंप का सामना करने में सफल रही। जहां ईंटें व प्लास्टर से बने मकान टूट कर नीचे गिर गये, वहीं दूसरी तरफ हल्का लकड़ी का ढांचा हिला, कांपा और पृथ्वी के कंपन के साथ झूलता रहा, लेकिन सीधा खड़ा रहा।

डौली ने शीघ्र ही झोपड़ी को अपने घर की तरह अपना लिया और खानसामे के बच्चों के साथ मिट्टी के नर्म फर्श पर खेलना शुरू कर दिया। मुकेश अभी तक दादाजी से चिपका हुआ था, जबकि दादी मां कमर पर हाथ रखे मकान की क्षति का सर्वेक्षण करने में लगी थीं।

"मेरी कामना है कि राकेश सही सलामत हो," दादाजी ने कहा। "अगर तुम मुकेश पर नजर रखो तो मैं जाकर उसकी खोज खबर ले आऊं।"

"हां, जाओ। मुझे उसकी चिंता हो रही है," दादी मां बोली। "हमें एक और भूकंप का सामना भी करना पड़ सकता है !"

"तुम यहां ठीक से हो न?"

"अब यहां पर गिरने के लिए कुछ नहीं बचा है। मुमताज कहता है कि आज रात हमें उसके घर में ही सोना चाहिए। यही सबसे सुरक्षित जगह जान पड़ती है।"

"तुम और बच्चे वहां पर सो सकते हो। मैं बाहर खुले में सो जाऊंगा। आज काफी गर्मी है और मुझे नहीं लगता कि वर्षा होगी।"

जब दादाजी राकेश को खोजने चले गए तो दादी मां और मुमताज ने मकान के मलबे में उन चीजों को ढूंढना शुरू किया, जिन्हें

अब भी इस्तेमाल में लाया जा सकता हो। दुर्भाग्य से उनका अधिकांश सामान मलबे के ढेर में काफी नीचे दब गया था, और निकालने लायक शायद यही चीजें शेष रह गयी थीं–सिर्फ एक टूटी फूटी बच्चा गाड़ी, कपड़ों से भरा एक बक्सा, सारडीन मछली के कई डिब्बे, फलों के रस के कुछ डिब्बे जो घास में बिखरे पड़े थे, और दादाजी की टाइप करने वाली मशीन, जो वैसे भी काम नहीं करती थी। उन्हें इस बात की खबर ही नहीं थी कि पिकिल ध्वस्त इमारत के भीतर, तमाम चीजों के नीचे दबा हुआ है। उन्होंने सोचा था कि वह कहीं पड़ोस में होगा और हमेशा की तरह समस्या के कारण की खोज में दौड़ लगा रहा होगा।

"मेरी गुड़ियों को खोजो !" डौली ने जोर देकर कहा। "और गुड़िया के घर को भी।"

किंतु गुड़िया का घर अब नहीं बचा था।

"अब और खिलौने नहीं," मुकेश ने यह मानते हुए कि वह अब बड़ा हो गया है संतोष के साथ कहा। "अब हम लोग गरीब हैं।"

"क्या बैंक भी टूट गया है ?" डौली ने पूछा

"जरूर टूटा होगा," किसी महात्मा की तरह मुकेश ने कहा।

दादाजी की मौसम साफ रहने की भविष्यवाणी के बावजूद, वर्षा शुरू हो गयी और उन्हें मुमताज की छोटी सी झोपड़ी में शरण लेनी पड़ी। छोटे से कमरे में काफी भीड़ हो गयी थी, लेकिन मुमताज ने इसकी कोई परवाह नहीं की–उसका दिल बहुत बड़ा था।

उफनती झील का पानी तेजी के साथ बह निकला और उसी तेजी से उसने आसपास के क्षेत्र को जलमग्न कर दिया था। राकेश पेड़ की शाखाओं के बीच से अपने स्कूल की दिशा में ताक रहा था। वह समय का पता लगाना चाहता था। आमतौर पर स्कूल की इमारत के ऊपर बना घंटाघर मीलों दूर से दिखाई देता था, लेकिन अब उसका कहीं कोई निशान नहीं था। असल में, यह तब अदृश्य हो गया, जब स्कूल की इमारत ढेर हो गयी थी। अभी भी हैडमास्टर को उनकी मेज के आसपास पड़े मलबे में से बाहर निकालने की जी तोड़ कोशिश की जा रही थी, जहां एक शहतीर के गिर जाने के कारण वे फंसे

रह गए थे। कक्षाएं बूचड़खाने में बदल गयी थीं और रसोईघर में आग लग गयी थी जो इमारत के अन्य हिस्सों में भी फैलती जा रही थी। स्कूल को दोबारा से शुरू करने में अब महीनों लग जायेंगे। ऐसे कई थे जो अब वहां कभी वापस नहीं लौटेंगे।

कुछ देर बाद राकेश पेड़ से नीचे उतर आया। उसने चारों ओर अपनी साइकिल को खोजा, लेकिन वह उसे कहीं दिखाई नहीं दी। अन्य बहुत सी चीजें पेड़ की जड़ों के पास बहकर आ गयी थीं, जिनमें एक मरी हुई बिल्ली, डूबकर मरे कई चूजे, मछलियां जो पानी बह जाने के बाद तड़पती रह गयी थीं, और सिनेमा के इश्तहार वाला एक बोर्ड भी शामिल था। बंबई के एक मशूहर फिल्मी सितारे का चेहरा कीचड़ से पुत गया था।

दूर से उसे धूल का एक विशाल बादल दिखाई पड़ा। उस समय ठीक से पता नहीं चला, लेकिन यह धूल सैकड़ों ढह चुकी अथवा क्षतिग्रस्त इमारतों से उठ रही थी। राकेश निश्चय ही यह जान चुका था कि भूकंप आया था, एक ऐसा जोरदार भूकंप, जिसे काफी विशाल क्षेत्र में महसूस किया गया होगा। उसके दादा-दादी और भाई-बहन का क्या हुआ होगा ? उसने शहर के बीचों बीच से गुजरने वाली सड़क पर घर की तरफ दौड़ना शुरू कर दिया।

उसे यकीन नहीं आ रहा था कि जिसके बीच से होकर वह दौड़ रहा है, यह वही शहर है, क्योंकि कई प्रमुख निशानियां मिट चुकी थीं। शहर का सबसे बड़ा और महंगा होटल ग्रैंड ईस्टर्न ढेर हो चुका था। उसके कई अतिथि मारे गए थे। बाहर एक एम्बुलेंस खड़ी थी और सड़क के पार खड़ी फायर-ब्रिगेड की एक मोटर जगह जगह से उठती आग की लपटों को बुझाने का प्रयत्न कर रही थी। लगभग स्वचालित ढंग से ही राकेश, राहत कार्यों में लगे कर्मचारियों की मदद करने लगा, जो मलबा साफ करने में जुटे हुए थे। वह ईंटों तथा टूटे फर्नीचर को हटाने के अलावा कुछ ज्यादा नहीं कर सकता था। तब उसने महसूस किया कि शायद उसके अपने घर की भी यही दुर्दशा हुई होगी। थोड़ी देर के लिए वह रुका और कभी आलीशान रह चुके होटल के मलबे को भयभीत होकर घूरने लगा। तभी उसने अपने



कंधे पर किसी का स्पर्श अनुभव किया। दादाजी उसके पीछे खड़े थे।

"तुम ठीक तो हो, मेरे बच्चे ?"

राकेश ने सिर हिलाया, हालांकि वह हक्का-बक्का दिख रहा था। उसने पूछा, "और घर में सब ?"

"वे सब ठीक हैं।" दादाजी ने मकान के बारे में कोई जिक्र नहीं किया। "आओ चलें, यहां तुम कुछ भी नहीं कर सकते। तुम्हारी साइकिल का क्या हुआ ?"

"वह पानी में बह गयी। झील का सारा पानी जैसे उछल कर बाहर आ गया था। मुझे तो एक पेड़ पर चढ़ना पड़ा।"

वे चुपचाप घर की ओर चल पड़े। लेकिन उनके चारों तरफ कोलाहल और खलबली मची हुई थी।

राकेश ने यह नहीं सोचा था कि उसे उपना घर पूरी तरह ध्वस्त हालत में मिलेगा। उसने चारों ओर सदमे और निराशा से देखा।

"सब कुछ खत्म हो गया," आखिर वह बोला। "दुर्भाग्य . . . कैसा भयानक दुर्भाग्य . . .।"

"नहीं," दादाजी ने कहा, "हम लोग भाग्यशाली हैं कि जिंदा हैं। क्या ऐसा नहीं है ?"

4

देर रात गए, दादाजी को संदेह हुआ कि क्या वे बोलने में जल्दबाजी कर बैठे थे। एक और शक्तिशाली कंपन हुआ, और मुमताज की जर्जर झोपड़ी झूलने और थरथराने लगी मानो, वह गर्म हवा वाला कोई गुब्बारा हो। शहर में कई और मकान टूट फूट गये।

दादाजी मौसम के मामले में भी गलत साबित हुए, क्योंकि वर्षा रुकने का नाम नहीं ले रही थी और उन्हें बाहर खुले में सोने का अपना इरादा बदलना पड़ा। अन्य सभी फटे टाट के टुकड़ों तथा मकान से सुरक्षित निकाले गए बिस्तर में झोपड़ी के फर्श पर लेटे हुए थे। वहां भारी घिचपिच हो गयी थी। मुमताज, उसकी पत्नी तथा चार छोटे बच्चों ने आधी जगह घेर रखी थी, शेष आधी जगह में दादी मां और परिवार के अन्य सदस्य थे। मुकेश तथा छोटे बच्चों के अलावा, कोई भी ठीक से सो नहीं पाया।

आधी रात को पिकिल को मलबे में से रास्ता बनाकर बाहर निकलने में आखिरकार सफलता मिल ही गयी। वह प्लास्टर की धूल में सनकर सफेद हो गया था और उसके लंबे कानों में से एक लगभग पूरा कट चुका था। वह झोपड़ी के बाहर बैठ गया और रात भर रोता रहा। शहर के अन्य हिस्सों में दूसरे कुत्तों ने भी रोना शुरू कर दिया। यह एक अनोखी और भयानक रात थी, जिसमें तेज हवाएं, वर्षा, कुत्तों का रोना, और फिर से जमीन में एक और कंपन का डर शामिल था।

दादाजी ने अनुभव किया कि भूकंप आने पर हालांकि झोपड़ी डोलने लगी थी, किंतु ईंट व पत्थर की बड़ी इमारतों के विपरीत, जो कि इतनी जल्दी ढह गयी थीं, उसमें नीचे गिर पड़ने का कोई लक्षण नहीं दिखाई दिया। वास्तव में ईंट तथा पत्थर से बनी हुई

लगभग हर चीज ध्वस्त हो गयी थी, हालांकि उस समय उन्हें मालूम नहीं था। लकड़ी के बने ढांचे, चाहे वे कितने ही जर्जर क्यों न रहे हों, भूकंप के सामने टिके खड़े थे।

कुछ दिनों तक भूकंप से हुई क्षति का पूरा अंदाजा नहीं लगाया जा सकता था, क्योंकि भूकंप पूरे असम तथा बंगाल के कुछ हिस्सों तक महसूस किया गया था। एक स्थान पर एक रेलगाड़ी पलट गयी थी, जबकि एक अन्य रेलगाड़ी पटरी से नीचे उतर गयी थी। चेरापूंजी की पहाड़ियों में एक हजार से भी अधिक लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था। शक्तिशाली ब्रह्मपुत्र नदी ने उफन कर अपने तट को तोड़ दिया था और कई किसान बाढ़ में डूब गए थे। एक छोटे से कस्बे में दो हाथी बाजार में जमीन पर बैठ गए और अगली सुबह तक उठने को राजी नहीं हुए। एक आदमी भाग्यशाली था। जब उसके घर की दीवारें गिरीं तो एक मटके से उसके ऊपर सिक्कों की वर्षा होने लगी। अन्य किसी भी व्यक्ति



को कोई खजाना नहीं मिला।

रात भर वर्षा होती रही। हालांकि भूकंप का मुख्य झटका गुजर चुका था, फिर भी लगभग हर पांच मिनट बाद हल्के झटके लगातार आते रहे। राकेश बड़े लोगों के साथ जागता रहा। उसे यकीन था कि स्कूल की इमारत गिर चुकी होगी और अब महीनों तक स्कूल नहीं खुलेगा। करने को कोई और खास काम भी नहीं होगा।

सुबह तड़के ही, मुमताज उठा और अपने छोटे से स्टोव पर चाय बनाने लगा। दादाजी उठ चुके थे और बाहर चले गए थे। वर्षा थम गयी थी, किंतु जैसे ही लाल और क्रोधित सूरज निकला, आसमान भी जख्मी दिखाई देने लगा बहुत से लोगों के लिए, यह एक लंबा और दुखद दिन होगा।

कुछ ही देर में बच्चे जाग गए और मकान के आसपास खेलने लगे। दादी मां ने सारडीन मछली का डिब्बा खोला, लगता था कि सारडीन के डिब्बे भूकंपसह थे। उधर मुमताज की पत्नी ने चपातियां बनायीं। सारडीन मछली के साथ वे बहुत अच्छी लगीं। पिकिल ने भी खूब मजे से उन्हें खाया। दादी मां ने अपना सिर धोकर जूड़ा बांध लिया और वे फिर से सामान्य अनुभव करने लगी थीं।

"क्या हम कहीं बाहर चले जायेंगे?" राकेश ने चपाती में लिपटी सारडीन मछली चबाते हुए पूछा।

"मेरे ख्याल से हमें जाना ही पड़ेगा," दादी मां ने कहा। "हम कलकत्ता जा सकते हैं, या फिर चाय बागान में तुम्हारे पिता के साथ रह सकते हैं।"

"मैं जाना नहीं चाहता," मुकेश बोला।

"मुकेश हमेशा औरों से उल्टी दिशा में चलना चाहता है," राकेश ने कहा। "और तुम्हारा क्या विचार है, डौली? तुम क्या करना चाहती हो?"

"मेरी गुड़िया को घर खोदकर बाहर निकालो," डौली ने कहा।

"हम तुम्हें दूसरी गुड़िया ला देंगे," राकेश ने कहा। "मैं तुम्हारे लिए एक गुड़िया बना दूंगा।"

"हमें कलकत्ता ही चलना होगा," दादाजी बोले। "वहां स्कूल काफी ज्यादा हैं।"

"नहीं," राकेश बोला। "हमें यहीं अच्छा लगता है। स्कूल फिर से खुल जायेगा।"

"लेकिन अब हमारे पास कोई घर नहीं है।"

"हम इसे दोबारा बना सकते हैं। क्या हम ऐसा नहीं कर सकते?"

"हां," मुकेश ने सहमति दी। "हम इसे दोबारा बना सकते हैं।"

"इसे दोबारा बनाओ," डौली ने दोहराया, "इसे दोबारा बनाओ!"

"कहना आसान है मगर करना कठिन," दादी मां ने कहा। "इसके लिए धन कहां से आयेगा?"

"हमारे डैडी किसलिए हैं?" राकेश जानना चाहता था। "वे नौकरी करते हैं। नया मकान बनाने के लिए वे हमें पैसा भेज सकते हैं। नहीं क्या? पिता का तो यह फर्ज है।"

"हां, मेरे ख्याल से वह ऐसा कर सकेगा," दादी मां ने सारडीन मछली का दूसरा डिब्बा खोलते हुए कहा। "बेटे ऐसे वक्त पर काम आने के लिए ही होते हैं।"

दादाजी फाटक पर खड़े थे जब उन्होंने अपने बढ़ई दोस्त आजाद को सड़क से गुजरते देखा। वह थका हुआ खिंचा खिंचा दिखाई दे रहा था। आजाद ने अभिवादन में अपना हाथ ऊपर उठाया, और ऐसा लगा मानो वह वहां से निकल जाना चाहता हो। आमतौर पर वह बातचीत करने के लिए रुक जाया करता था।

"ऐसी भी क्या जल्दी है, आजाद?" दादाजी ने प्रश्न किया। "शहर में अब तो काफी काम होगा, जिसमें तुम एक साल से भी ज्यादा समय तक व्यस्त रह सकते हो।"

"लेकिन किसलिए और किसके लिए?" आजाद ने बिना रुके ही कहा। "मेरी पत्नी और लड़की सैनिक अस्पताल में पड़ी है। केवल मैं ही सुरक्षित बचा हूं। क्या पता वे बचेंगी या नहीं. . .। मैं भी वहीं पर सोता हूं, क्योंकि मेरा अपना मकान भी गिर चुका है।"

उसके जैसे और भी कई लोग थे, जिनका बहुत नुकसान हुआ था। मुमताज आठ साल की एक बच्ची को अपने घर ले आया था, जो दूर के रिश्ते में उसकी चचेरी बहन लगती थी। उसने अपने माता-पिता दोनों को उस समय खो दिया था, जब उनके मकान की छत गिर पड़ी थी।

"वह अकेली कैसे रहेगी?" दादी मां ने पूछा।

"मैं उसकी देखभाल करूंगा," मुमताज बोला। "मैं एक और बेटी चाहता था।"

"तुम्हारे लिए यह आसान नहीं होगा," दादी मां ने कहां। "तुम हम लोगों को मदद करने दो।"

"खुदा की यही मर्जी है," मुमताज बोला। "उसने हमारी जान बख्शी है। हमें उन लोगों की मदद करनी चाहिए जो हमारे जैसे किस्मत वाले नहीं हैं।"

भूकंप से सुरक्षित बचे अधिकांश लोग शहर छोड़ कर जाने लगे थे। लेकिन दादाजी और उनके परिवार ने अपनी संपत्ति को फिर से संजोने का काम शुरू कर दिया। वे मलबे को हटायेंगे, इस्तेमाल में आने योग्य सामान को छांटकर अलग करेंगे, और फिर नये सिरे से शुरुआत करेंगे; किंतु दादाजी ने तय कर लिया था कि अब वे हल्के लकड़ी के चौखटों के साथ छोटी ईंटों को इस्तेमाल करेंगे। "ताकि यदि फिर कभी भूकंप आये," उन्होंने कहा, "तो हम जमीन पर ढेर हो जाने की बजाए मुमताज की झोपड़ी की तरह, डोलते हुए भी स्थिर बने रहें।"



"मैं समझती हूं, इस तबाही से हमें कुछ सबक जरूर लेना चाहिए," दादी मां ने कहा।

एक पड़ोसी ने टूटी हुई दीवार को देखते हुए पूछा, "क्या आप लोग शहर छोड़कर नहीं जा रहे हैं?"

"नहीं," दादाजी ने कहा। " हम लोग यहीं रहेंगे।"

"विशेषज्ञों का कहना है कि एक और भूकंप जरूर आयेगा।

"कौन जाने?" दादाजी बोले।

"आप विशेषज्ञों पर भी विश्वास नहीं करते?"

"क्या उन्होंने इस भूकंप की भविष्यवाणी की थी?"

"नहीं, ऐसा तो उन्होंने नहीं किया," पड़ोसी ने स्वीकार किया।

"तो फिर हम क्यों भागें? आप कहां जाने वाले हैं?"

"कटक"

"विशेषज्ञों का अनुमान है कि कटक में तूफान आने वाला है।"

पड़ोसी ने घबराकर अपनी बांहें झटकीं और चलता बना। वह सोच में डूबा दिखाई दे रहा था। शायद कटक जाने का विचार बहुत अच्छा नहीं है। दुर्घटना से बचने के लिए, आखिर कोई कहां जाये?

दादाजी और परिवार ने वहीं रहने और विपत्ति का सामना करने का फैसला किया, जहां वे बहुत समय से रह रहे थे हो सकता है कि फिर से भूकंप आये। लेकिन इस बार वे पूरी तरह से तैयार रहेंगे। और इसी बीच, कुछ क्षति पूर्ति भी हो गयी। मुकेश और डौली को अपने खिलौनों और गुड़ियों में से कुछ वापस मिल गए, जो पिचक तो गए थे, किंतु फिर भी पहचाने जा सकते थे। मलबे के नीचे से दादी मां का ओवन करीब करीब सही सलामत मिल गया जिसमें बिस्कुट बनकर तैयार होने ही वाले थे। और दादाजी को उनका पिचका हुआ लोहे का स्नान-टब मिल गया, जिसे उन्होंने ठोक पीटकर सीधा कर लिया।

उन्होंने टब को आम के पेड़ के नीचे रखा, उसे गर्म पानी से भरकर दोपहर बाद की धूप में स्नान किया। वहां साबुन तो नहीं था, लेकिन बगीचे में खूब सारा पोदीना मौजूद था। उन्होंने ऊंचे स्वर में गाना शुरू कर दिया, जिससे वे पक्षी जिन्होंने अभी अभी घोंसलों में लौटना शुरू किया था, डर से चौकन्ने हो गए और फिर से उड़कर दूर चले गए।

जंगल में आग की लपटें



1

रोमी अपनी साइकिल पर चढ़ने ही वाला था कि उसने दूर पेड़ों की कतार के पीछे से उठता हुआ धुआं देखा।

"यह तो जंगल की आग मालूम पड़ती है," उसके अपने दोस्त और सहपाठी, प्रेम ने कहा।

"यह बिल्कुल पूर्व की ओर है," रोमी बोला। "सड़क से काफी दूर।"

"बहुत तेज हवा चल रही है," सड़क के पार चक्कर खाकर उड़ते सूखे पत्तों को देखते हुए प्रेम ने कहा।

मई का आधा महीना बीत चुका था और कई हफ्तों से वर्षा नहीं हुई थी। घास सूखकर भूरी हो गयी थी और पेड़ों के पत्तों पर धूल की परत जम गयी थी। हालांकि शाम के छह बजने को थे, फिर भी लड़कों की कमीजें पसीने से नम थीं।

"जल्दी ही अंधेरा हो जायेगा," प्रेम ने कहा। "बेहतर यही होगा कि रात को तुम मेरे घर पर ही रुक जाओ।"

"नहीं, मैंने कहा न कि मुझे आज रात घर पर ही रहना है। मेरे पिताजी अस्वस्थ हैं। डाक्टर ने मुझे उनके लिए कुछ गोलियां दी हैं।"

"फिर तो तुम्हें जल्दी निकल जाना चाहिए। वह आग फैलती हुई प्रतीत होती है।"

"अरे, वह अभी काफी दूर है। जंगल से होकर साइकिल पर गुजरने में मुझे केवल चालीस मिनट ही लगेंगे। अच्छा प्रेम कल फिर मिलेंगे।"

रोमी अपनी साइकिल पर चढ़ा और गांव की मुख्य सड़क पर

पैडल मारते हुए मुर्गियों, आवारा कुत्तों और राहगीर गांव वालों को इधर उधर हटाते हुए बढ़ने लगा।

"अरे, सुनो तुम जा कहां रहे हो!" साइकिल के सामने से एकाएक हटते हुए एक ग्रामीण गुस्से से चिल्लाया। "सड़क को घर की जागीर



समझ रखा है क्या?"

"हां, घर की जागीर ही समझ रखा है," रोमी ने हंसते हुए कहा और साइकिल आगे बढ़ा ली।

उसका अपना गांव जंगल की दूसरी तरफ, करीब सात मील दूर था। उसके गांव में केवल एक प्राथमिक पाठशाला ही थी, और रोमी अब मिडिल स्कूल का विद्यार्थी था। उसके पिता ने, जो काफी संपन्न गन्ना-उत्पादक किसान थे, अभी हाल ही में उसे साइकिल खरीदकर दी थी। रोमी को स्कूल में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी और वह महसूस करता था कि वहां पर्याप्त छुट्टियां नहीं होतीं, किंतु लंबी दूरी तक साइकिल चलाने में उसे बड़ा आनंद आता था। अपनी कक्षा के अन्य छात्रों के साथ उसकी अच्छी निभती थी।

यदि गांव के वैद्य ने उसे पिता के लिए गोलियां न दी होतीं तो वह रात को प्रेम के साथ ही रह जाता। रोमी के पिता की पीठ में दर्द रहता था और ये गोलियां स्थानीय जड़ी-बूटियों द्वारा खासतौर से तैयार की गयी थीं। रोमी ने सोचा कि इतनी बढ़िया साइकिल मिलने के बदले, कम से कम वह इन गोलियों को जल्दी से जल्दी अपने पिता के पास पहुंचा देने का काम तो कर ही सकता है।

वह ध्यान से साइकिल चलाते हुए गांव के बाहर निकल गया। उसके आगे, जलते हुए जंगल से धुआं उठ रहा था और आसमान लाल दिख रहा था।

2

थोड़ी ही देर में उसने गांव को काफी पीछे छोड़ दिया। आगे थोड़ी चढ़ाई थी और उसे पार करने के लिए रोमी को जोर लगाकर पैडल चलाने पड़े। चढ़ाई की चोटी पर पहुंच जाने के बाद, सड़क गहरे ढलान के साथ जंगल के आरंभ तक चली जाती थी।

इस जगह पर ही रोमी को सबसे अधिक आनंद आता था। वह पैडल मारना बंद करके, आराम से गद्दी पर बैठा रहता और साइकिल को अपने आप धीरे धीरे ढलान से उतरने देता था। थोड़ी ही देर में सामने से तेज हवा उससे टकराने लगी, उसके बाल उड़कर माथे पर आ गए और कमीज फड़फड़ाने लगी। वह खुशी से गाने लगा।

जोर जोर से भौंकता हुआ एक कुत्ता गांव से ही उसके पीछे दौड़ रहा था। रोमी चिल्लाकर कुत्ते को दौड़ के लिए प्रोत्साहित कर रहा था।

फिर सड़क समतल हो गयी और रोमी फिर से पैडल मारने लगा।

आगे जंगल को देख, कुत्ता वापस गांव की तरफ लौट गया। उसे जंगल से डर लगता था।

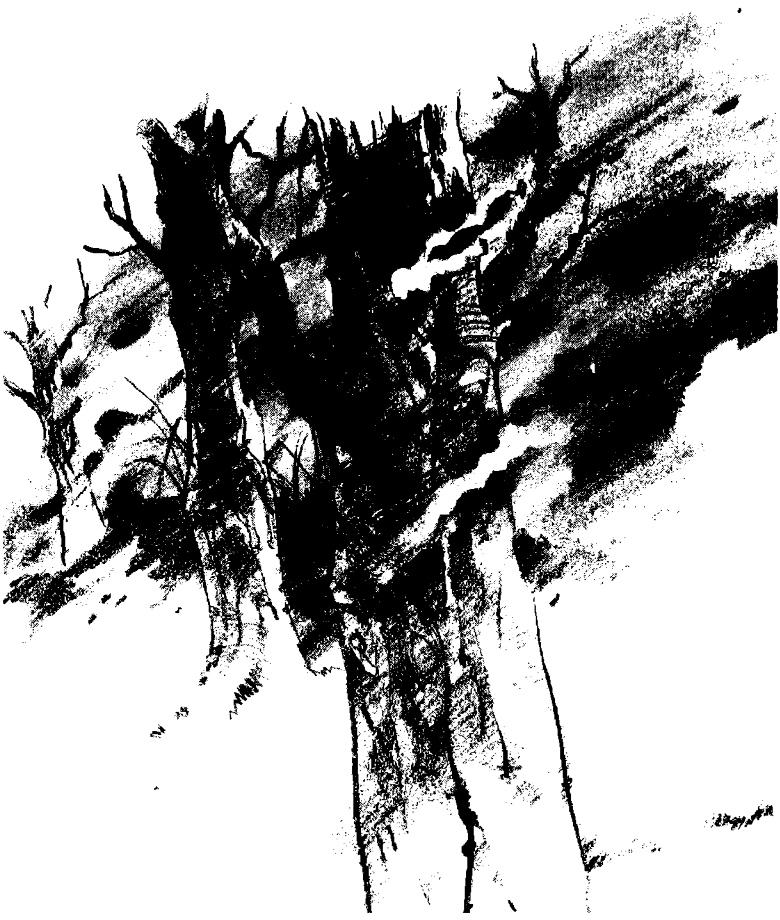
धुआं अब और अधिक गहरा हो गया था और रोमी को जलती हुई लकड़ी की गंध महसूस हुई। लेकिन उसके आगे की सड़क खाली थी। वह साइकिल पर आगे बढ़ता गया।

यह धूल से भरी एक ऊबड़-खाबड़ सड़क थी जो ठीक जंगल में से होकर जाती थी। सड़क के दोनों तरफ उगे ऊंचे पेड़ ढलते सूरज की रोशनी को रोक रहे थे। लेकिन दायीं तरफ आग की फैलती हुई लालिमा ने सड़क को रोशन कर दिया था और साइकिल पर सवार लड़के के सामने पेड़ों की विकराल छायाएं नृत्य करने लगी थीं।

सड़क प्राय: सुनसान रहा करती थी। किंतु आज की शाम, जंगल की आग से घबराकर भागते जंगली जानवरों की वहां चहल-पहल थी।

सबसे पहले रोमी को एक खरगोश दिखाई दिया जो उसके सामने से उछलता हुआ सड़क पार कर गया। उसके पीछे पीछे और भी बहुत से खरगोश थे। फिर बंदरों का एक झुंड आवेश में चिल्लाता हुआ एक कतार में सामने से निकला। रोमी ने सोचा कि ये प्राणी दूसरी तरफ सुरक्षित रहेंगे। आग सड़क को पार नहीं कर पायेगी।

किंतु आग नजदीक आती जा रही थी। इसका आभास होने पर रोमी और तेजी से पैडल घुमाने लगा। आधे घंटे के भीतर उसे जंगल



के बाहर निकल जाना चाहिए।

अचानक, सड़क के किनारे से कई तीतर हवा में उड़े और साइकिल के ठीक सामने से हड़बड़ी में काफी नीचे उड़ते हुए रास्ते को पार कर गए। सकपकाहट में रोमी नीचे गिर पड़ा। जब वह उठकर खड़ा हुआ और अपने कपड़े झाड़ने लगा तो उसने देखा कि घुटने से खून बह रहा है। घाव गहरा नहीं था, लेकिन उसने कुछ देर खून निकलने दिया, फिर अपना रूमाल निकालकर घुटने पर बांध लिया। फिर वह दोबारा साइकिल पर सवार हो गया।

अब वह साइकिल को थोड़ा धीमे चला रहा था, क्योंकि झाड़ियों में से पक्षी व जानवर बराबर निकलते आ रहे थे।

केवल तीतर ही नहीं, तोते, जंगली कौवे, उल्लू, नीलकंठ आदि छोटे पक्षी भी सड़क पार जा रहे थे और उनके चीत्कार से वातावरण गूंज रहा था।

सभी भागे जा रहे हैं, रोमी ने सोचा। वाकई यह बहुत बड़ी आग मालूम होती है।

दायीं तरफ पेड़ों के पीछे से उठती लपटों को अब वह देख सकता था, और सूखे पत्तों के जलने की कड़कड़ाहट को सुन सकता था। चेहरे पर गर्म हवा लग रही थी। जो पत्ते अभी तक जल रहे थे या जल कर राख हो चुके थे, वे हवा में इधर उधर उड़ रहे थे।

हिरणों का एक झुंड सड़क पार करने लगा। उनके गुजर जाने तक रोमी को रुकना पड़ा। वह फिर साइकिल पर चढ़ा और आगे बढ़ने लगा, किंतु अब पहली बार, उसे डर लग रहा था।

3

आगे से एक शिथिल झंकारभरी आवाज सुनाई दी। रोमी को इस बारे में पूरा यकीन था कि यह किसी जानवर की आवाज नहीं थी। कोई आग बुझाने वाली मोटर? आसपास पचास मील तक कहीं कोई आग बुझाने वाली मोटर थी ही नहीं।

झंकार करीब आती गयी और रोमी को मालूम हुआ कि वह शोर एक छोटे से लड़के की तरफ से आ रहा था, जो जंगल के रास्ते पर भागा चला जा रहा था। उसने दूध के दो केन उठा रखे थे।

"तेजू!" पड़ोस के गांव के उस लड़के को पहचानकर रोमी ने पुकारा। "तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"घर पहुंचने की कोशिश ही कर रहा हूं," साइकिल के साथ भागते तेजू ने हांफते हुए कहा।

"कूद कर बैठ जाओ," उसके लिए रुकते हुए रोमी बोला।

तेजू आठ या नौ साल का था, रोमी से लगभग दो साल छोटा। वह सड़क पर काम कर रहे कुछ मजूदरों को दूध देने आया था, लेकिन आग देखते ही मजदूर पहले ही भाग खड़े हुए थे। अब तेजू दूध से भरे केन लिए घर पहुंचने के लिए भागा चला जा रहा था।

वह साइकिल के डंडे पर बैठ गया, और रोमी फिर आगे बढ़ चला। उसे दोस्तों को डंडे पर बिठाकर साइकिल चलाने का काफी अभ्यास था।

"अपने दूध के केनों को बजाते रहो," रोमी ने कहा। "इससे जानवर यह समझ जायेंगे कि हम लोग आ रहे हैं। मेरी घंटी की आवाज बहुत तेज नहीं है। मैं अपनी साइकिल के लिए एक भौंपू ले लूंगा!"



"मुझे पहले यह नहीं पता था कि जंगल में इतने सारे जानवर हैं," तेजू बोला। "मैंने सड़क के बीचों बीच एक अजगर देखा। वह पूरी सड़क के आर पार लेटा हुआ था।"

"फिर तुमने क्या किया?"

"मैंने भागना जारी रखा और ठीक उसके ऊपर से छलांग लगाकर निकल आया।" तेजू बोलता ही जा रहा था, लेकिन रोमी का दिमाग आग की तरफ लगा हुआ था, जो अब काफी निकट ही थी। सूखी घास से लपटें उठकर पेड़ों के तनों और शाखाओं तक फैलती जा रही थीं। धुआं बल खाता हुआ जंगल के ऊपर उठ रहा था।

रोमी की आंखों में टीस उठ रही थी और उसके सिर के बाल तथा भौहें झुलस रही थीं। वह थक गया था, लेकिन अभी रुक नहीं सकता था। उसे आग की सीमा से बाहर निकलना था। अगले दस पंद्रह मिनट में वे साइकिल पर एक लकड़ी के पुल पर पहुंच जाएंगे, जिसके नीचे जंगल और गन्ने के खेतों को अलग करने वाली एक छोटी सी नदी बहती है।

नदी पार कर लेने पर वे सुरक्षित हो जाएंगे। दूसरी तरफ आग उन्हें छू भी नहीं पायेगी क्योंकि नदी के किनारे पर जंगल समाप्त हो जाता है। लेकिन क्या समय रहते वे नदी तक पहुंच सकेंगे?



4

टन, टन, टन, करके तेजू के दूध के केन बज रहे थे। लेकिन आग की आवाजें भी ऊंची होती गयीं।

सेमल के एक लंबे पेड़ में, जिसकी शाखाएं सड़क के पार तक फैली हुई थीं, आग लग गयी थी। वे लगभग पेड़ के नीचे थे, जब धमाके के साथ उसकी एक जलती हुई डाल कुछ गज की दूरी पर उनके सामने जमीन पर आ गिरी।

लड़कों को साइकिल से उतर जाना पड़ा और सड़क छोड़कर, बायीं तरफ की कंटीली झाड़ियों से होकर जाने को विवश होना पड़ा। साइकिल को खींचते धकियाते जलते हुए पेड़ से थोड़ा आगे जाकर वे फिर सड़क पर वापस आ गए।

"हम समय पर जंगल से बाहर नहीं निकल पायेंगे" डंडे पर फिर से बैठते हुए तेजू ने निराशा के साथ कहा।

"हम निकल जायेंगे," रोमी पूरी ताकत से पैडल घुमाते हुए बोला। "आग अभी तक सड़क के पार नहीं पहुंच पायी है।"

जैसे ही वह कह रहा था, तभी उसने बायीं तरफ घास में से छोटी सी लपट उछलते देखी। अब शोलों व जलते हुए पत्तों के उड़कर सड़क के पार पहुंचने और दूसरी तरफ की घास में आग लगा देने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

"अरे, देखो!" अचानक साइकिल रोक कर रोमी चिल्लाया।

"अब क्या हुआ?" अपनी दुखती हुई आंखें मलते हुए तेजू ने पूछा। और तब, धुएं के बीच से देखकर, उसकी समझ में आ गया कि उनका रास्ता किसने रोका है।

सड़क के बीचों बीच एक हाथी खड़ा था।



तेजू साइकिल के डंडे से फिसल गया। उसके केन जमीन पर गिरकर लुढ़कने लगे और उनके ढक्कन खुल जाने से दूध फैल गया।

हाथी करीब चालीस फुट की दूरी पर था। वह बैचैन सा इधर उधर हिल रहा था। उसे अब किस दिशा में जाना चाहिए, यह जानने के लिए वह अपना सिर इधर से उधर घुमाता तो उसके बड़े बड़े कान हिलने लगते।

दूर बायीं तरफ से, जहां जंगल अभी तक आग से अछूता बचा हुआ था, हाथियों का एक झुंड नदी की तरफ बढ़ रहा था। झुंड का नेतृत्व कर रहे हाथी ने अपनी सूंड ऊपर उठायी और चिंघाड़ते हुए आवाज लगायी। इसे सुन कर, सड़क पर खड़े हाथी ने भी अपनी सूंड ऊपर उठायी और चिंघाड़कर आवाज का उत्तर दिया। फिर वह झूमता हुआ, झुंड की दिशा में जंगल के भीतर घुस गया और इस तरह उसने रास्ता साफ कर दिया।

"आओ तेजू, उछलकर बैठ जाओ!" रोमी ने कहा। "हम यहां ज्यादा देर तक नहीं रुक सकते।"



5

तेजू अपने दूध के केनों को वहीं छोड़ कर साइकिल के डंडे पर जा बैठा। रोमी कुछ दूरी तक साइकिल तेज करने के लिए साथ साथ दौड़ा और फिर तेजी से उस पर चढ़ गया। जहां तक बन सका, वह सड़क की बायीं ओर ही रहा और लपटों,चरमराहट, धुएं और झुलसाने वाली गर्मी को अनदेखा करने की कोशिश करता रहा।

ऐसा लग रहा था कि वे सभी जानवर जो बच कर निकल सकते थे, निकल चुके थे। सड़क पार कर बाहर निकलने का क्रम रुक गया था।

"अब हम दोबारा नहीं रुकेंगे," रोमी ने दांत पीसते हुए कहा। "हाथी तक के लिए नहीं।"

"हम करीब-करीब पहुंच ही गए!" तेजू ने कहा। उसमें फिर से स्फूर्ति आ गयी थी।

गर्मी और धुएं से बेहाल एक गीदड़ बीच रास्ते में मृत अथवा बेहोश पड़ा था। रोमी रुका नहीं। उसने जानवर के बराबर से साइकिल घुमा कर निकाल ली। फिर उसने आखिरी प्रयास में अपनी पूरी ताकत लगा दी।

उसने अंतिम सौ गज का फासला सबसे तेज गति में पूरा किया और तब वे जंगल से बाहर थे। नदी की तरफ जाती ढलान वाली सड़क पर साइकिल आराम से अपने आप नीचे उतरने लगी।

"देखो!" तेजू चिल्लाया। "पुल में आग लग गयी है।"

जलते हुए अंगारे उड़कर लकड़ी के छोटे से पुल पर गिरे थे, और सूखी हुई पुरानी लकड़ी ने तुरंत आग पकड़ ली थी। अब वह धू-धू

करके जल रही थी।

रोमी घबराए नहीं। उसने सड़क छोड़कर साइकिल रेत और कंकड़ों के ऊपर चलानी शुरू कर दी। और फिर वे तेजी के साथ नदी तट पर नीचे उतरे और पानी के अंदर जा पहुंचे।

अगले ही क्षण उन्होंने पाया कि वे अंधेरे में एक दूसरे को खोजने के लिए नदी का पानी छपछपा रहे हैं।

"बचाओ!" तेजू ने चीख मारी। "मैं डूब रहा हूं!"



6

"पागल मत बनो," रोमी बोला। "पानी गहरा नहीं है। यह केवल घुटनों तक है। यहां आओ और मेरा हाथ पकड़ लो।"

तेजू छींटे उड़ाता हुआ आया और रोमी की कमर की पेटी पकड़ ली।

"पानी बहुत ठंडा है," उसने कहा। उसके दांत किटकिटा रहे थे।

"क्या तुम वापस जाकर गर्म होना चाहते हो?" रोमी ने पूछा। "कुछ लोगों को कभी संतोष नहीं होता। आओ, साइकिल उठाने में मेरी मदद करो। यह ठीक यहां पर नीचे पड़ी है, जहां हम खड़े हैं।"

दोनों ने मिलकर साइकिल को पानी से बाहर निकाला और उसे सीधा खड़ा कर लिया।

"अब इस पर बैठ जाओ," रोमी बोला। "पीछे से धकेल कर तुम्हें नदी पार करा दूंगा।"

"हम बह जायेंगे," तेजू ने कहा।

"नहीं, हम नहीं बहेंगे। इस मौसम में नदी में पानी ज्यादा नहीं रहता। लेकिन बीच में धारा काफी तेज है, इसलिए पक्का होकर बैठना। ठीक है?"

"ठीक है," घबराए स्वर में तेजू ने कहा।

रोमी ने साइकिल को नदी के पार ले जाना शुरू किया। उसका एक हाथ गद्दी पर और दूसरा हैंडल के हत्थे पर था। गर्मी के मध्य में नदी उथली और सुस्त रहती थी। फिर भी बीच धारा में यह काफी तीव्र थी। किंतु जलते हुए जंगल से सुरक्षित बाहर निकल आने के बाद रोमी इस छोटी सी नदी से हार मानने को कतई तैयार न था।

उसने यह जानते हुए भी कि जूते खो जायेंगे, पैरों को झटका देकर

उन्हें उतार फैंका और फिर नदी के तल में पड़े चिकने पत्थरों पर पंजों को मजबूती से रखकर बढ़ने लगा। उसने पूरा ध्यान अपना संतुलन बनाए रखने और साइकिल व तेजू को धारा के पार निकाल ले जाने पर लगा दिया। यहां पानी उसकी कमर तक पहुंच रहा था, और तेजू के लिए पानी की धार बहुत ज्यादा तेज रहती। किंतु जब वे उथली जगह पर पहुंचे तो तेजू नीचे उतरा और साइकिल को धक्का लगाने में रोमी की मदद करने लगा।

वे नदी के दूसरे तट पर पहुंचे और निढाल होकर घास पर गिर पड़े।

"अब हम आराम कर सकते हैं," रोमी बोला। "लेकिन पूरी रात नहीं. . . मेरे पास पिताजी के लिए एक दवाई है।" उसने अपनी जेब को टटोला और पाया कि पुड़िया में रखी गोलियां भीगकर गीला चूरा हो गयी हैं। " कोई बात नहीं वैसे भी इन्हें पानी के साथ ही लिया जाना है," उसने कहा।

उन्होंने आग की तरफ देखा, जो तेजी से जंगल में फैलती जा रही थी। वह उस सड़क को पार कर चुकी थी, जिस पर से होकर वे नीचे आये थे। आकाश सुर्ख लाल हो उठा था, और नदी में आकाश का रंग प्रतिबिंबित हो रहा था।

बहुत सारे हाथी भटकते हुए नदी में घुसकर बैठ गए थे। अपनी सूंडों से एक दूसरे पर पानी की बौछार करके वे शीतल हो रहे थे। और आगे जाकर नदी में हिरण तथा अन्य जानवर मौजूद थे।

रोमी और तेजू ने आग की लालिमा में एक दूसरे की तरफ देखा। पहले वे एक दूसरे को अच्छी तरह नहीं जानते थे। लेकिन अब उन्हें लग रहा था कि वे वर्षों पुराने दोस्त हैं।

"तुम क्या सोच रहे हो?" तेजू ने पूछा।

"मैं सोच रहा हूं," रोमी ने कहा, "कि यदि एक या दो दिन में आग बुझ भी जाये तो भी पुल की मरम्मत में काफी समय लग जायेगा। मैं सोचता हूं कि अब स्कूल से मजेदार लंबी छुट्टी मिलेगी।"

"लेकिन तुम तो पैदल नदी पार कर सकते हो," तेजू बोला। "अभी तो पार की है तुमने।"

"असंभव," रोमी ने कहा। "इसका बहाव बहुत तेज है।"



रु. 7.50

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया